



भारतीय प्राचीन संस्कार से संसार में शांति की स्थापना

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, नागौर

amitajainjuly1@gmail.com

सारांश-शान्ति और अशांति दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। मन भावनाओं का धरातल है। मन को नियन्त्रण में रखकर शांति का भाव रखा जा सकता है। शारीरिक क्रियाओं का नियंत्रण बुद्धि के द्वारा किया जा सकता है और मन की क्रियाओं का नियंत्रण संकल्प एवं अभ्यास से किया जा सकता है। यदि इन क्रियाओं का नियंत्रण समुचित ढंग से होता है तो मन के अंदर शांति रह सकती है। अच्छी वर्षा हो जाये तो किसान के मन में शान्ति का भाव होता है और कुम्भकार के मन में अशांति के भाव होते हैं। सकारात्मक गुण और ज्ञान चेतना का विस्तार शान्ति को बनाने में सहायक है।

शब्दावली- सकारात्मकता, संस्कार, चेतना, खुशी, शालीनता, अहिंसा, पंचशील

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. कोठारी, गुलाब (2016) मानस, शिक्षा और संस्कार, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
2. कोठारी, गुलाब (2016) मानस: संस्कृति और सभ्यता, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
3. आचार्य महाश्रमण (2014), आओ हम जीना सीखें, जैन विश्व भारती, लाडनूं-341306
4. आचार्य महाश्रमण (2014), सुखी बनो, जैन विश्व भारती, लाडनूं-341306
5. सिन्हा, अरविन्द (2006) आपका व्यक्तित्व आपकी सफलता, रामचन्द्र अग्रवाल जयपुर पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
6. ओशो (2005) शिक्षा में क्रांति, ताओ पब्लिशिंग, पुणे